

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा को जानना, सत्र 0, अभिविन्यास और परिचय

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

ईश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबिल धर्मशास्त्र पर मेरे पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। आज मैं आपके साथ पहला पाठ साझा करना चाहता हूँ। हम इसे GMO कहते हैं, और मैं कुछ ही देर में उन संख्याओं और अक्षरों के बारे में समझाऊँगा।

लेकिन यह पहला व्याख्यान है, और इसमें ओरिएंटेशन और परिचय, जी.एम.ओ., स्लाइड और नोट्स हैं। अब, आपको कक्षा के लिए विषय-सूची डाउनलोड करके प्रिंट कर लेना चाहिए या फिर, आप जिस भी डिवाइस का उपयोग करते हैं, उस पर उसे प्रिंट कर लेना चाहिए। साथ ही, कुछ पावरपॉइंट स्लाइड और नोट्स भी हैं जो आपके पास उपलब्ध होने चाहिए क्योंकि आप व्याख्यान के दौरान उन्हें अपने पास रखना चाहेंगे। वीडियो पर बात करने वाले व्यक्ति को सुनना बहुत उबाऊ हो सकता है, और मुझे लगता है कि अगर आपके पास वे नोट्स हैं, तो आप मेरे साथ सोच सकते हैं और परिणामस्वरूप सीखने में बेहतर अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

ठीक है, अब ईश्वर की इच्छा जानने के संबंध में, आइए देखें कि हम आपको पाठ्यक्रम की बड़ी तस्वीर देने के लिए इस पर कैसे हमला करने जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, आपके नोट्स के पहले पृष्ठ की विषय-सूची में, आपके पास एक रूपरेखा है कि हम क्या करने जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, भाग 1 का नाम है ईश्वर की इच्छा की समझ शास्त्र पर आधारित है।

भाग 2, नीचे की ओर, विवेक के लिए विश्वदृष्टि और मूल्य मॉडल की आवश्यकता होती है। भाग 3, दूसरे पृष्ठ पर, विवेक के लिए व्यक्तिपरक चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। भाग 4, बाइबिल के विश्वदृष्टि और मॉडल प्रणाली द्वारा निर्णय लेने का अभ्यास करना, और फिर मेरे पास एक परिशिष्ट है जिसमें मैं परमेश्वर की इच्छा जानने के बारे में कुछ प्रतिस्पर्धी विचारों का संक्षेप में मूल्यांकन करूँगा।

ठीक है, अब हम वापस चलते हैं और विषय-सूची को थोड़ा सा देखते हैं। भाग 1 के अंतर्गत ईश्वर की इच्छा का विवेक शास्त्र पर आधारित है। मैं अगले व्याख्यान में शुरू करने जा रहा हूँ, ठीक है, यह वास्तव में व्याख्यान 1 है, यह केवल परिचय है, और इसे जीएम 1 कहा जाएगा। मैं अपने मॉडल का अवलोकन करूँगा।

दरअसल, मैं उस व्याख्यान में पूरे मॉडल को बहुत जल्दी देखने जा रहा हूँ। इसका कारण यह है कि, मुझे लगता है कि मॉडल का संश्लेषण करना, टुकड़ों को एक-एक करके लेने और फिर अंततः उसे एक साथ फिट करने से कहीं बेहतर है। इसलिए मैं आपको पूरी चीज़ को देखने में मदद करना चाहता हूँ और फिर हम इसे भागों में तोड़ देंगे।

कॉलेज में एक बार मेरा एक सहकर्मी था जिसने मस्तिष्क के काम करने के तरीके पर अपना शोध प्रबंध लिखा था। वह एक शिक्षक और वैज्ञानिक था, और वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा, मुख्य

निष्कर्ष यह था कि संश्लेषण से विश्लेषण की ओर सीखना सबसे अच्छा काम करता है, संश्लेषण से विश्लेषण की ओर नहीं। सभी पेड़ों की जांच करने से पहले जंगल के बारे में एक विचार रखें।

और इसलिए पहला व्याख्यान आपको जंगल के बारे में बताएगा। यह आपको इस बात का अवलोकन देगा कि मैं पूरी श्रृंखला के दौरान किस बारे में बात करने जा रहा हूँ। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि यदि आप कुछ और नहीं सुनते हैं, यदि आप बाइबिल ई-लर्निंग पर इन व्याख्यानों को पढ़ रहे हैं, तो कम से कम पहला व्याख्यान सुनें और समझें कि मैं क्या करने जा रहा हूँ।

व्याख्यान दो, हम इसे GM2 कहेंगे। अब इस GM0, GM1, GM2 का कारण इन नोट्स और वीडियो को पैकेज में व्यवस्थित रखना है क्योंकि यह दृष्टि से बाहर हो सकता है और यह देखना बहुत मुश्किल हो सकता है कि प्रवाह क्या होने वाला है। इसलिए मैंने यह सुनिश्चित करने के लिए इसे इस तरह से किया है कि आप आसानी से अनुसरण कर सकें।

व्याख्यान दो, GM2, बाइबल संस्करणों के बारे में सीखा जाएगा। चूंकि परमेश्वर की इच्छा जानना बाइबल से संबंधित है, और चूंकि हम सभी ग्रीक और हिब्रू से अनुवादित संस्करणों का उपयोग कर रहे हैं, तो हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम बाइबल के रूप में क्या उपयोग कर रहे हैं। मैं यूएसए में हूँ और मैं अंग्रेजी बाइबल का उपयोग करूँगा, और मेरा व्याख्यान मूल रूप से अंग्रेजी बाइबल पर ही केंद्रित होगा क्योंकि यह मेरा क्षेत्र है।

लेकिन मुझे पता है कि यह बाइबिल ई-लर्निंग के लिए एक अंतरराष्ट्रीय साइट है और आप दूसरे देश में हो सकते हैं। आप वास्तव में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से मुझे सुन रहे होंगे, जो मेरे अंग्रेजी व्याख्यान को दूसरी भाषा में अनुवाद करता है। और आपके पास अपने स्वयं के बाइबिल के विभिन्न संस्करण हो सकते हैं, या शायद नहीं भी।

यह कुछ ऐसा है जिसे आपको तय करना होगा। लेकिन हम बाइबल के संस्करणों को देखेंगे ताकि हम इस तथ्य को समझ सकें कि आप जो बाइबल पढ़ते हैं, जो अनुवाद आप पढ़ते हैं, वह एक निश्चित प्रतिमान में लिखा और अनुवादित किया जाता है कि इसे शाब्दिक, कार्यात्मक से अधिक गतिशील या व्याख्यात्मक कैसे प्रस्तुत किया जाए। और मैं आपको उस व्याख्यान में यह समझाऊंगा।

हम बहुत संक्षेप में इस बारे में बात करेंगे कि चर्च ने पूरे इतिहास में परमेश्वर की इच्छा को कैसे पहचाना है। मैं आपको इसका एक दृश्य बताता हूँ। फिर हम पुराने नियम को देखेंगे, हम नए नियम को देखेंगे, और फिर हम पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की इच्छा को समझने के उस विशेष खंड के संदर्भ में इसे समाप्त करेंगे।

फिर हम भाग दो पर जाएंगे, विवेक के लिए विश्वदृष्टि और मूल्यों के मॉडल की आवश्यकता होती है। और यह आपको व्याख्यान एक से स्पष्ट हो जाएगा, जो आपको अवलोकन के साथ-साथ मेरे ब्रेकआउट भी देता है। लेकिन यह मेरा मॉडल है।

मेरा मॉडल बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के मॉडल का उपयोग करने से संबंधित है ताकि आप उन विभिन्न मुद्दों को समझ सकें जो आपके ईसाई जीवन में आपके सामने प्रस्तुत

किए जाते हैं जहाँ आपके पास बाइबिल की प्रत्यक्ष शिक्षा नहीं है। मेरे पास वास्तव में एक व्याख्यान है जिसमें हम इस बारे में बात करेंगे कि बाइबिल कैसे सिखाती है। यह प्रत्यक्ष रूप से सिखाती है, यह निहितार्थपूर्ण तरीकों से सिखाती है, और हमारे पास वह है जिसे हम रचनात्मक निर्माण कहते हैं जो पूरी बाइबिल को लेता है और इसे एक ऐसे तरीके से एक साथ रखता है जो एक निश्चित समझ को बढ़ावा दे सकता है।

अब, यह चर्च के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। जैसा कि हम अच्छी तरह जानते हैं, हमारे पास हर कोई एक ही पृष्ठ पर नहीं है। हमारे पास कैल्विनिस्ट, आर्मिनियन, एंग्लिकन, प्रेस्बिटेरियन, बैपटिस्ट, पेंटेकोस्टल, होलीनेस और चर्च ऑफ गॉड हैं।

हमारे पास सभी तरह की अभिव्यक्तियाँ हैं जो एक ही बाइबिल को पढ़ती हैं, लेकिन कुछ बहुत अलग, कभी-कभी बहुत अलग और कुल मिलाकर थोड़े अंतर पर पहुँचती हैं। और यह बहुत से लोगों के लिए बहुत भ्रामक है। हमारे पास परमेश्वर की ओर से बाइबिल कैसे हो सकती है और फिर भी हम अलग-अलग निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं? और इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर ने हमें प्राकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से एक प्रेरित शास्त्र दिया है जिसका उपयोग उसने भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों के साथ किया था, लेकिन उसने हमें कोई प्रेरित व्याख्याकार नहीं दिया।

और यह जीवन का एक तथ्य है। हमारे पास परमेश्वर का वचन है, और फिर भी ईश्वरीय लोग, समान रूप से योग्य और प्रशिक्षित, अलग-अलग निष्कर्षों पर पहुँचते हैं। यह मानवीय क्षेत्र का हिस्सा है।

यह एक बड़ा दार्शनिक मुद्दा है, एक धार्मिक मुद्दा जिस पर हम बाद में चर्चा कर सकते हैं। इसलिए, हम व्याख्यान 7 और 8 में विश्वदृष्टि और मूल्यों के बारे में बात करेंगे। फिर, व्याख्यान 9 में, हम बाइबिल मॉडल में इस दृष्टिकोण के घटकों के बारे में बात करेंगे। और हम अपने निर्णयों को एक ऐसी प्रक्रिया द्वारा संसाधित करेंगे जो यह सुझाव देती है कि आपकी संस्कृति आपके सामने आने वाले प्रश्नों के संबंध में बाइबिल के साथ कैसे सोचना है।

भाग 3, व्यक्तिपरक चुनौतियों को समझना और उनका समाधान करना। ये वे चीजें हैं जो शायद आपके लिए कई मायनों में सबसे दिलचस्प हैं क्योंकि आप सोच रहे हैं कि वे क्या हैं। इसलिए हम उन्हें व्यक्तिपरक चुनौतियाँ कहते हैं।

उदाहरण के लिए, मैं आपको विवेक की भूमिका पर एक व्याख्यान दूंगा। विवेक क्या है? यह मनुष्य में कैसे काम करता है? और इसका परमेश्वर को जानने, परमेश्वर की इच्छा को जानने से क्या संबंध है? आपके सिर में जो आवाज़ें सुनाई देती हैं, वे दुनिया में कहाँ से आती हैं? क्या आपका सिर सिर्फ़ शैतान और परमेश्वर और किसी भी अन्य चीज़ के लिए एक श्रोता कक्ष है जो सामने आ सकती है? इसलिए, हमें विवेक पर गौर करना होगा क्योंकि यह सोचने की क्षमता में एक महत्वपूर्ण मुद्दा है कि परमेश्वर ने हमें अपने मनुष्यों के साथ बनाया है। हम पवित्र आत्मा की भूमिका के बारे में बात करेंगे।

चर्च के इतिहास में, खास तौर पर पश्चिमी चर्च में, बहुत विविधता है। और मैं पूर्वी या अन्य देशों के बारे में बहुत अच्छी तरह से नहीं बोल सकता, लेकिन पश्चिमी चर्च, यूरोप और अमेरिका में, हमारे पास पवित्र आत्मा कैसे काम करती है, इस बारे में बहुत विविधता है। दिन के अंत में, हमें उस प्रश्न का उत्तर देना होगा और यहाँ फिर से, वही बाइबल, अलग-अलग उत्तर।

मैं आपको इस मुद्दे पर इस तरह से काम करने जा रहा हूँ कि मुझे उम्मीद है कि इससे आपको कम से कम यह समझने में मदद मिलेगी कि मैं पश्चिमी ईसाई धर्म में एक प्रमुख उत्तर क्या मानता हूँ और यह मेरे खुद के लिए है। हम इस बारे में भी बात करेंगे कि प्रार्थना किस तरह से परमेश्वर की इच्छा जानने से संबंधित है। फिर, भाग चार में, हम बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली के आधार पर निर्णय लेने का अभ्यास करेंगे।

हम कुछ दृष्टांत लेंगे और उनके माध्यम से संक्षेप में बात करेंगे ताकि आपको कुछ पहलुओं को दिखाया जा सके कि सवालों के जवाब देने के लिए बाइबल का उपयोग कैसे किया जाता है। बाइबल यह कैसे सिखाती है, इस पर व्याख्यान अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि आपके सामने आने वाली अधिकांश चुनौतियों का उत्तर देने के लिए बाइबल में कोई प्रमाण पाठ नहीं है। बाइबल ट्रांसजेंडर से बात नहीं करती।

लेकिन बाइबल में लिंग के बारे में बात की गई है। इसलिए, आपको निहितार्थ निकालने होंगे और ऐसी संरचनाएँ बनानी होंगी जो बाइबल के अनुसार विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली रखने और निर्णय लेने के लिए विश्वसनीय हों। ठीक है, तो यह विषय-सूची का एक सिंहावलोकन है।

और मुझे उम्मीद है कि आप इस पर विचार करेंगे और खुद को इस तरह से स्थापित करेंगे कि आपको पता चले कि हम किस तरह आगे बढ़ रहे हैं। और जब आप इस तरह के व्याख्यानों में आते हैं, तो आप विषय-सूची को चुन सकते हैं। आप कह सकते हैं, यार, मुझे विवेक में दिलचस्पी है।

तो, मैं वहाँ जाकर उसे सुनने जा रहा हूँ। यह ठीक है। लेकिन सच तो यह है कि यह एक मॉडल है।

मॉडल एक दूसरे से जुड़े होते हैं। इसीलिए मैं पूरे मॉडल पर पहला व्याख्यान दे रहा हूँ। मॉडल एक दूसरे से जुड़े होते हैं, और आपको भागों को समझने के लिए पूरी चीज़ को समझना होगा।

रॉबर्ट मौस नामक एक टिप्पणीकार ने रहस्योद्घाटन पर अपनी पुस्तक, रहस्योद्घाटन की पुस्तक के आरंभ में एक कथन दिया है। और वह कहता है, आप रहस्योद्घाटन की पुस्तक के बारे में तब तक कुछ नहीं जानते जब तक आप रहस्योद्घाटन की पुस्तक के बारे में सब कुछ नहीं जानते। अब, यह एक दिलचस्प कथन है, और आप सभी जानते हैं कि शायद बाइबल की अंतिम पुस्तक को समझने की कोशिश करके आपको चुनौती दी गई है।

खैर, इसका उत्तर यह है कि क्योंकि वह पुस्तक उन लेंसों के अधीन है जिन्हें हम अपने पढ़ने के लिए लाते हैं, इसलिए हमें इसे पूरी तरह से समझने और उन मॉडलों को देखने की आवश्यकता है जो इसे खोलते हैं ताकि हम अपने स्वयं के मॉडल को भी समझ सकें। रहस्योद्घाटन उस

विशेष तरीके से अद्वितीय है। लेकिन सभी मॉडल उस तरह से अद्वितीय हैं क्योंकि एक मॉडल जानकारी का एक सुसंगत पैकेज है जो एक प्रक्रिया प्रदान करता है जिसके द्वारा आप सवालों के जवाब दे सकते हैं और चीजें सीख सकते हैं।

ठीक है, तो यह विषय-सूची है और मुझे उम्मीद है कि यह आपके सामने है और आप इस पर काम कर सकते हैं। सिर्फ मेरी बात सुनना ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका नहीं है। सुनो और देखो।

ठीक है, चलिए यहाँ कुछ परिचयात्मक मुद्दों पर संक्षेप में बात करते हैं। चलिए थोड़ा अपने बारे में बात करते हैं। अगर आप हैंडआउट में देखेंगे जिसमें परिचय है, तो आप पेज दो पर थोड़ा सा जा सकते हैं, आपको स्वागत दिखाई देगा और आप देखेंगे कि मैं कौन हूँ। खैर, मैं गैरी मीडर्स हूँ।

मैं संयुक्त राज्य अमेरिका के मिशिगन में ग्रैंड रैपिड्स थियोलॉजिकल सेमिनरी से ग्रीक और न्यू टेस्टामेंट का एमेरिटस प्रोफेसर हूँ। और मुझे 1967 में नियुक्त किया गया था। यह शायद आप में से कई लोगों के जन्म से पहले की बात है।

मैंने 30 से ज़्यादा सालों तक कॉलेजों और खास तौर पर सेमिनरीज़ में पढ़ाया है। और इसलिए, मेरे पास काफ़ी अनुभव है और मैंने मुख्य रूप से बाइबल पढ़ाया है, हालाँकि मैंने दर्शनशास्त्र जैसी कुछ अन्य चीज़ें भी पढ़ाई हैं। मैंने हेर्मेनेयुटिक्स, क्राइस्ट का जीवन और कई तरह की चीज़ें पढ़ाई हैं।

अब, हम क्या अध्ययन करेंगे और कैसे अध्ययन करेंगे? मैंने इसे परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबिल धर्मशास्त्र कहा है। मैं व्यवस्थित और बाइबिल और ऐतिहासिक धर्मशास्त्र के बीच अंतर के स्पष्टीकरण में नहीं जा रहा हूँ। लेकिन बाइबिल धर्मशास्त्र की कुंजी यह है कि यह संपूर्ण बाइबिल को देखता है और इसे एक संश्लेषण के रूप में देखता है।

आजकल हम इसे पवित्रशास्त्र की एक महा-कथा कहते हैं। बाइबल की बड़ी कहानी क्या है? और मैं परमेश्वर की इच्छा जानने के इस प्रश्न के अंतर्गत बाइबल को इस तरह से देखना चाहता हूँ। बाइबल समग्र रूप से इसे किस तरह प्रस्तुत करती है? और यह बाइबिल धर्मशास्त्र के क्षेत्र में आता है।

हम बाइबल को उसके अपने संदर्भ में समझना चाहते हैं। एक कथन है कि जब तक हम बाइबल का अर्थ नहीं जानते, तब तक हम नहीं जानते कि बाइबल का क्या अर्थ है। दूसरे शब्दों में, हमें मूल संदर्भ में जितना संभव हो सके उतना बेहतर ढंग से समझना होगा कि लेखक अपनी शिक्षा के संबंध में क्या संदेश दे रहा था और परमेश्वर उस लेखक के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता था।

जब हम इसे समझ जाते हैं, तो हमारे पास आगे बढ़ने और यह कहने का एक मंच होता है कि, यह मुझसे कैसे संबंधित है? कई बार लोग बाइबल को ऐसे पढ़ते हैं जैसे कि हर आयत उनके जीवन के लिए एक प्रमाण पाठ है। यह बाइबल का एक भयानक उपयोग है। वास्तव में, यह बाइबल का बहुत अधिक दुरुपयोग करता है।

किसी ने कहा है कि बाइबल आपके लिए लिखी गई है, लेकिन आपके लिए नहीं। बाइबल बहुत ही सामयिक है। बाइबल की किताबें इतिहास में एक निश्चित मुद्दे और लोगों के एक निश्चित समूह से निपटती हैं और हम उससे सीखते हैं कि ईश्वर कैसे काम करता है और फिर हम इसे अपनी दुनिया में स्थानांतरित करते हैं।

एक शब्द है संदर्भिकरण, जिसमें हम शायद एक हजार साल पहले की कोई चीज़ लाते हैं और फिर कहते हैं, यह आज हमारे लिए कैसे प्रासंगिक है? यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिस पर कुछ विचार करने की ज़रूरत है। ऐसा करना हमारे लिए स्वाभाविक नहीं है और हम स्वाभाविक रूप से उन चीज़ों का जवाब नहीं जानते हैं, इसलिए हमें सतर्क रहना चाहिए ताकि हम शास्त्रों का दुरुपयोग न करें और हमें इसके बारे में सोचना चाहिए। पेज तीन पर, आप देखेंगे कि हमारे पास सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ हैं।

ईश्वर की इच्छा जानने के विषय में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। चर्च, संप्रदाय, देश, चाहे वह अमेरिका हो या यूरोप या जापान या सऊदी अरब, जहाँ आपका ईसाई समुदाय हो या दुनिया का कोई अन्य स्थान हो, आपकी अपनी परंपराएँ हैं। आपका चर्च कुछ खास तरीकों से संचालित होता है और मिशनरी बाहर जाते हैं और वे अपना अमेरिकी तरीका अपनाते हैं और अगर वे होशियार हैं, तो वे आपका तरीका सीखने की कोशिश करते हैं ताकि वे फिर पुल बना सकें।

लेकिन समस्या यह है कि कभी-कभी, जैसा कि सभी जानते हैं, अमेरिका की यह बुरी आदत रही है कि वह पहले लोगों को समझे बिना अपनी समझ को थोप देता है। हम ऐसा नहीं करना चाहते। हम यह सवाल पूछना चाहते हैं कि आपने ईश्वर की इच्छा को कैसे संसाधित किया है? अब हमारे बीच निरंतरता का एक बड़ा बिंदु है, और वह है बाइबल, और इसलिए हम कोशिश करेंगे कि बाइबल इस विषय के बारे में हमारे विचारों का मध्यस्थ बने, न कि हमारी परंपरा।

अब हमारी परंपराएँ मौजूद हैं। वे हमारे अंदर समाहित हैं। वे लेंस हैं।

हम लेंस के बारे में बात करते हैं। जब आप बाइबल पढ़ते हैं, तो आप लेंस पहनते हैं और आप इसे उन लेंसों के माध्यम से पढ़ते हैं जो आपको इसके अर्थ के बारे में बताते हैं। यह फिर से रहस्योद्घाटन की पुस्तक की तरह है।

आप बाइबल पढ़ते हैं, आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को सहस्राब्दि से पहले के लेंस, सभी सहस्राब्दि लेंस, सहस्राब्दि के बाद के लेंस, सभी प्रकार के लेंसों के माध्यम से पढ़ते हैं। आपको पता होना चाहिए कि आपने कौन सा चश्मा पहना है और वास्तव में अन्य चश्मों का अनुभव किया है ताकि आप इस बात की अग्रिम समझ प्राप्त कर सकें कि आप कहाँ हैं और आप हमारे साथ ईश्वर के संचार को कैसे समझते हैं। इसलिए, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति एक समस्या हो सकती है।

मेरे व्याख्यान के दौरान, मेरे चित्रण और मेरे चुटकुले भी सांस्कृतिक रूप से बहुत अधिक अंतर्निहित हैं, और हो सकता है कि वे आपके लिए बहुत मायने न रखें क्योंकि यह मेरी संस्कृति का हिस्सा है। मैं ऐसा नहीं करने की कोशिश करता हूँ, यह समझते हुए कि बाइबिल ई-लर्निंग

एक तरह की सार्वभौमिक, वैश्विक प्रस्तुति है और यह दुनिया भर में होगी, इसलिए, मेरे चित्रण आपके चित्रण जितने अच्छे नहीं होंगे, लेकिन आपको दोनों के बीच अंतर समझना होगा। मैंने इस विषय पर एक किताब लिखी है जिसका नाम है ईश्वर के तरीके से निर्णय लेना, ईश्वर की इच्छा जानने का एक नया मॉडल।

अब यह प्रकाशक का शीर्षक है। प्रकाशक किताबें बेचने के लिए शीर्षक देते हैं। मैं इसे ईश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबिल धर्मशास्त्र कहूंगा, लेकिन उन्होंने इसे इस तरह के ढांचे में डाल दिया।

इसे बेकर ने 2003 में प्रकाशित किया था। बेकर के पास यह अब उपलब्ध नहीं है, लेकिन यह अंग्रेजी और स्पेनिश में लागोस से उपलब्ध है। अब मैं जो पढ़ा रहा हूँ उसकी विषय-वस्तु उस पुस्तक में है, लेकिन मैंने अपने व्याख्यानों का क्रम अलग रखा है।

कभी-कभी मैं आपको हेड वीडियो स्लाइड पर एक नोट देता हूँ कि पुस्तक में आप कहाँ पढ़ सकते हैं कि हम व्याख्यान में किस बारे में बात कर रहे हैं। इन अध्ययनों को करने के लिए आपको पुस्तक की आवश्यकता नहीं है, लेकिन यदि आपके पास यह उपलब्ध हो तो यह कुछ अच्छा हो सकता है। अनुक्रम।

आप मॉडल को कैसे अनुक्रमित करते हैं? अब याद करें कि अगर हम गलातियों की पुस्तक को देख रहे थे या हम मसीह के जीवन को कालानुक्रमिक रूप से देख रहे थे या हम किसी अन्य पुस्तक को देख रहे थे, तो अनुक्रम हमारे लिए निर्धारित है। हम अध्याय एक से शुरू करते हैं और अंतिम अध्याय पर जाते हैं। हम इसे समग्र रूप से देखते हैं।

हम इसे व्यक्तिगत रूप से संदर्भ में देखते हैं। खैर, एक मॉडल थोड़ा अलग है क्योंकि एक मॉडल एक विशाल प्रतिमान है और हमें उस प्रतिमान का दृश्य प्राप्त करना होगा ताकि यह देखा जा सके कि इसके आंतरिक भाग कैसे काम करते हैं। केल्विनवाद एक प्रतिमान है।

आर्मिनियनवाद एक प्रतिमान है। प्रीमिलेनियलिज्म एक प्रतिमान है। सभी सहस्राब्दीवाद।

धर्मशास्त्र के सभी विभिन्न प्रकार प्रतिमान हैं और उनमें आमतौर पर किसी न किसी तरह का क्रम होता है। सच कहूँ तो, ईश्वर की इच्छा के बारे में मेरी चर्चा को क्रमबद्ध करना बहुत मुश्किल है क्योंकि जैसे ही मैं किसी चीज़ के बारे में बात करना शुरू करता हूँ, आप किसी ऐसी चीज़ के बारे में सोचने लगते हैं जिसके बारे में मैं बाद में बात करने वाला हूँ क्योंकि आपके दिमाग में विचार है और मैं उसे क्रमबद्ध करने और टुकड़ों को बाहर लाने की कोशिश कर रहा हूँ। इसलिए मैं वह व्याख्यान देने जा रहा हूँ जिसमें पहले पूरे मॉडल का अवलोकन किया जाएगा और फिर ब्रेकआउट किया जाएगा ताकि आपको बड़ी तस्वीर मिल जाए और आप देख सकें कि मैंने अपने मॉडल को कैसे एक साथ रखा है, और फिर आप अलग-अलग व्याख्यानों को बेहतर ढंग से समझ पाएँगे।

अब, मैं अध्ययन पैटर्न के बारे में बात करता हूँ। मैं एक शिक्षक हूँ, और आप एक ऑडिटर हैं। सेमेस्टर के अंत में ग्रेड मिलने का दबाव आप पर नहीं होता, लेकिन मेरा मानना है कि चूँकि आप यहाँ हैं, इसलिए आप एक शिक्षार्थी हैं।

क्या आप जानते हैं कि एक शिक्षार्थी क्या होता है? एक शिक्षार्थी वह व्यक्ति होता है जो जानने के लिए उत्सुक होता है। हो सकता है कि आपकी जिज्ञासा आपको पागल कर दे क्योंकि जिज्ञासा होने का मतलब है कि आप तब तक सवाल पूछते रहेंगे जब तक आपको कोई संतोषजनक उत्तर न मिल जाए। सरल उत्तर न लें।

भगवान की इच्छा के बारे में लिखी गई ज़्यादातर किताबों में पाँच बातें बताई गई हैं, इन्हें एक पंक्ति में लगाएँ और आप ठीक हो जाएँगे। खैर, मुझे खेद है, जीवन बिलकुल वैसा नहीं है, है न? न ही बाइबल ऐसी है। तो, अध्ययन पैटर्न।

ठीक है, सबसे पहले, मैंने आपको बहुत सारे नोट्स दिए हैं। इस खास कोर्स के लिए मेरे नोट्स में पावरपॉइंट स्लाइड्स हैं। वे आपके पास पीडीएफ के रूप में आ सकते हैं, मुझे नहीं पता कि कैसे, लेकिन आपके पास वे होंगे ताकि आपके डिवाइस पर वे हों, उन्हें प्रिंट करें, इस तरह की चीज़ें।

तो, आपके पास ये हैं और फिर आपके पास लिखित नोट्स हैं। प्रत्येक व्याख्यान एक संयोजन होगा, कभी-कभी एक या दूसरा, लेकिन यह हमेशा वहाँ रहेगा। इसलिए, आप उन्हें पहले रखना चाहते हैं।

वीडियो को तब तक न सुनें जब तक कि आपके पास कागज़ न हो, या फिर वो नोट्स न हों जो मैं आपके सामने इस्तेमाल करने जा रहा हूँ। इससे यह सिर्फ़ बात करने वाले व्यक्ति की तुलना में ज़्यादा दिलचस्प हो जाता है। बात करने वाला व्यक्ति उपदेश देना होगा।

मैं पढ़ाने की कोशिश कर रहा हूँ। इसलिए, अध्ययन पैटर्न बेहद महत्वपूर्ण हैं। आप ये चीज़ें पढ़ सकते हैं जो मैंने आपको पेज चार पर दी हैं।

जैसा कि हमने अभी किया, विषय-सूची का अवलोकन करें। सबसे पहले व्याख्यान की स्लाइड और नोट्स प्राप्त करें। उन्हें देखें।

मैं कहूँगा कि एक नोटबुक बना लें ताकि आपके पास अपनी सीख को रिकॉर्ड करने के लिए कुछ हो क्योंकि अगर आप सीख को रिकॉर्ड नहीं कर रहे हैं, तो आप हैरान रह जाएंगे कि आखिर आप क्या सुन रहे हैं। वीडियो देखें। उलझे नहीं।

इस कोर्स को एक बार जल्दी से पूरा करके फिर से करना बेहतर है, बजाय इसके कि कुछेक की तरह आगे बढ़ें और कभी कहीं न पहुँचें। तो, संश्लेषण फिर विश्लेषण। संश्लेषण फिर विश्लेषण।

अपनी सोच पर नज़र रखें क्योंकि आपको जो विचार मिलते हैं वे बहुत महत्वपूर्ण होते हैं और वे ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें आप ट्रैक करना चाह सकते हैं। आप मुझसे संवाद भी कर सकते हैं। नोट्स में इस बारे में जानकारी दी गई है कि मुझसे कैसे संपर्क करें।

तो, मैं आपको इस व्याख्यान को चुनने और इसमें आने के लिए धन्यवाद देता हूँ। मुझे उम्मीद है कि इससे आपको यह समझने में मदद मिली होगी कि आगे कैसे बढ़ना है और आप सबसे अच्छे शिक्षार्थी कैसे बन सकते हैं। और थोड़ी देर में, हम व्याख्यान एक पर जाएँगे जो उस अवलोकन पर आधारित होगा जिसके बारे में मैंने बात की है।

पेज चार और पांच पर मैंने आपको कुछ ग्रंथसूची दी है। बहुत, बहुत, बहुत चुनिंदा। मेरे पीछे, मैं रिटायर हो चुका हूँ और मेरी ज़्यादातर लाइब्रेरी टेक्सास में है और मैं फ्लोरिडा में हूँ, दक्षिण-पश्चिम फ्लोरिडा में।

मेरे पास आज हम जिस विषय पर बात कर रहे हैं, उससे संबंधित साहित्य की ढेरों अलमारियाँ हैं। लेकिन आप उसे यहाँ नहीं रख सकते। लेकिन यहाँ कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण चीज़ें हैं जो आपके लिए उपयोगी हो सकती हैं, जिन्हें आप देख सकते हैं यदि वे आपके पास उपलब्ध हैं और हो सकता है कि वे कभी-कभी अनुवाद में भी उपलब्ध हों यदि आप दूसरी भाषा बोलते हैं।

परिचय में एक अंतिम बात और मैं इस पर अधिक विस्तार से नहीं बोलूंगा क्योंकि मैं आपको इसे पढ़ने दूंगा। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि मैं कौन हूँ। याद रखें, हम एक मॉडल के बारे में बात कर रहे हैं और अलग-अलग मॉडल हैं क्योंकि अलग-अलग लेंस हैं।

यहाँ मेरी पूर्वधारणाओं और मेरे दृष्टिकोणों के बारे में एक कथन है। मैं बाइबल को किस तरह आधिकारिक मानता हूँ और मैं इसे ईश्वर के सामान्य साधन के रूप में कैसे देखता हूँ और यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैं व्यक्तिपरक मुद्दों पर व्याख्यान दूँगा।

मैं अपनी व्यक्तिपरक भावनाओं और अपने दिमाग में आने वाले विचारों के अनुसार जीवन नहीं चलाता और मैं समय बीतने के साथ-साथ आपको यह सब समझाऊंगा। लेकिन मैं शास्त्रों के विश्लेषण के आधार पर जीवन चलाता हूँ, कि यह जीवन से कैसे संबंधित है, और मैं जीवन में किसी खास मुद्दे के बारे में निर्णय लेने के लिए बाइबल और मेरे बीच तर्क की रेखाओं के रूप में क्या दिखा सकता हूँ क्योंकि यही ईसाई होने का मूल अर्थ है। हम अपने जीवन और अपने विश्वास और अभ्यास को शास्त्रों पर ही आधारित करते हैं।

तो मैं अपनी बात समाप्त करते हुए एक और बात कहना चाहता हूँ। यह आखिरी बात है जो मैं इन नोट्स के छोटे पेज पर कह रहा हूँ। आप कह सकते हैं, आप पढ़ सकते हैं कि मैं कौन हूँ और मेरी कुछ पूर्वधारणाएँ क्या हैं और आप कह सकते हैं, ठीक है, हम सहमत नहीं हैं।

अरे, कोई बात नहीं। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तुम कुछ जानो। हम यहाँ एक प्रतिमान के बारे में बात कर रहे हैं।

हम एक मॉडल के बारे में बात कर रहे हैं। आप मेरा मॉडल, विश्लेषण और सोच और बाइबिल की व्याख्या का मेरा मॉडल, और कुछ दार्शनिक मुद्दे और धार्मिक मुद्दे ले सकते हैं जो आप किसी प्रश्न का उत्तर देने से संबंधित हैं। आप उस मॉडल को ले सकते हैं और अपनी खुद की पूर्वधारणाओं को जोड़ सकते हैं, और यह अभी भी काम करता है।

दूसरे शब्दों में, आप बच्चे को नहाने के पानी के साथ बाहर नहीं फेंकते हैं, जैसा कि अमेरिकी जीवन में एक कहावत है। नहाने के पानी के साथ बच्चे को भी बाहर न फेंके। मेरा प्रतिमान किसी भी पूर्वधारणा को कवर करता है।

यहां तक कि एक नास्तिक भी मेरे प्रतिमान का उपयोग कर सकता है। उनके पास मेरी विषय-वस्तु नहीं होगी, लेकिन उनके पास मेरा प्रतिमान होगा और आप भी इसे अपना सकते हैं। भले ही आप एक मजबूत करिश्माई स्थिति में हों या आप एक मजबूत प्रेस्बिटेरियन या सुधारवादी स्थिति में हों, प्रतिमान अभी भी काम कर सकता है क्योंकि प्रतिमान एक सामान्य प्रतिमान है।

यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप शास्त्रों और उसके अनुप्रयोग के संबंध में विषय-वस्तु का मूल्यांकन कैसे करते हैं। यही कुंजी है, और कई बार, आपकी अपनी धार्मिक परंपराएँ इस बारे में कुछ न कुछ ज़रूर कहती हैं। इसलिए, मैं एक तरह से सोचता हूँ कि किसी भी पृष्ठभूमि का कोई भी व्यक्ति इन व्याख्यानों में आ सकता है और बाइबल में परमेश्वर की इच्छा के बारे में सोचने के प्रतिमान को देखकर लाभ उठा सकता है।

इसलिए, मुझे विश्वास है कि आप हमारे साथ बने रहेंगे और इन व्याख्यानों को सुनेंगे। मेरा परिचय यहीं समाप्त होता है और मैं आपसे GM1 में मिलूँगा, जो हमारी श्रृंखला का पहला व्याख्यान होगा। धन्यवाद।

ओह, मुझे एक और बात कहने दीजिए। कक्षाओं में, शुरुआत में और अंत में प्रार्थना करना प्रथागत है। इन व्याख्यानों में, मैं आपसे ऐसा करने के लिए कहने जा रहा हूँ, जैसा कि मैं खुद करता हूँ कि आप शुरुआत और अंत में प्रार्थना करें, लेकिन मैं इसे कैमरे पर नहीं दिखाऊँगा।

तो, आपका दिन शुभ हो, और हम आपसे अगले व्याख्यान में मिलेंगे।